विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान की एक अनुपम भेंट
A Unique Gift For International Unity and Development & Quick Evolution of Human Consciousness

अखण्ड भारत सन्देश
Akhand Bharat Sandesh

पाक्षिक (Fortnightly) हिन्दी/English

वर्ष 13 * अंक 01 * विक्रम सम्वत् 2070 * शाके 1935 * आरोही द्वापर युग का 313वाँ वर्ष * 01-15 सितम्बर 2013 * मूल्य :10.00

Essential Need To Change The Present System Of Lifestyle

जीवन जीने की वर्तमान पद्धति में बदलाव की आवश्यकता अनिवार्य

What is the cause of present problems in the home, society, country and in the world? In order to understand the situation, let us concentrate on the illustration of the egg and chick. Initially, in the embryonic stage, the chick is very small and there is vast space in the egg. As the chick expands and grows, the space becomes more and more congested causing the chick to feel tremendous stress and suffocation. Captive in a tight space, the chick begins to make lots of stressful noises within. Upon hearing the noises, the mother hen cracks open the egg shell and sets the chick free into a vast space of infinite freedom, peace, joy and comfort.

Kriyayoga will work like the Divine Mother. It will break the shell of ignorance and we will be liberated like the chick from an egg and enjoy the vastness of our existence.

As we are into the 313th year of an awakening phase, the Ascending Dwapara yuga, our consciousness has become expanded. **We are unable to live peacefully under the present chicken-coop, outdated systems.** The rule and regulations of the

... continued on Pg 5

व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं का कारण क्या है ? इसको समझने के लिए आप मुर्गी के अण्डे के अंदर चुज्जे की कल्पना करें । अण्डे के अंदर चुज्जे को लगता है कि अण्डा बहुत बड़ा संसार है। वही चुज्जा जब बढ़ने लगता है तो उसे वही अण्डा छोटा लगने लगता है और एक समय ऐसा आता है जब वह अण्डे में ससक जाता है, वह चिल्लाता है, कराहता है, बेचैन होता है। उसी समय मुर्गी माँ आती है और अण्डे के बाह्य आवरण (शेल) को तोड़ देती है फिर चुज्जा अण्डे से बाहर निकल आता है और खुशी से बाह्य वातावरण में नाचता हुआ अनन्त ब्रह्माण्ड की अनुभूति करता है । ठीक यही स्वरूप राष्ट्र की वर्तमान व्यवस्था प्रणाली (System) का है । वर्तमान शिक्षा नीति, राजनीति, चिकित्सा नीति, व्यापार नीति, सामाजिक नीति आदि के संकीर्ण दायरे में हम मुर्गी के चुज्जे की तरह ससक गये हैं और चूँ चूँ कर रहे हैं । समाज के हर क्षेत्र में व्याप्त समस्याएँ इस बात का संकेत दे रही हैं कि अब नयी व्यवस्था व युगानुकूल नियमों को बनाने व उन्हें क्रियान्वित करने की आवश्यकता है ।

– शेष पृष्ठ 5 पर

Real Meaning of Rajayoga, *Raja* (King) & Politics
राजयोग, राजा तथा राजनीति का वास्तविक स्वरूप 2

6 - 9
Changing The Systems of The Nation To Let Shine Indian Heritage
आईएएस के चयन का तरीका बदलना सुनिश्चित

10 - 11
मानव शिशु की माँ का दूध ही उपयुक्त पोषण
Mother's Milk Provides Best Nutrition for Child

The Real Meaning of Rajayoga, *Raja* (King) and Politics

Politics is derived from the word polite. The term polite refers to being humble. Therefore, only by the practice of Kriyayoga can one become polite or humble and a true politician.

We can observe through history that India has never once tried to conquer the land of any other nation. India has never forced its philosophy on any other nation. There have been many countries who have conquered foreign lands and forced people to adopt their style of thinking out of fear. To reflect the glory of True Indian heritage, it is necessary that we faithfully and devotedly seek God within ourselves, in a scientific manner, to reveal the hidden infinite knowledge, power, peace and joy within.

The simplest, easiest, highest and complete method to seek God scientifically is Kriyayoga Meditation. In the scriptures, Kriyayoga has also been referred to as Rajayoga. One who is an expert practitioner of Rajayoga is known as a *Raja*. By the practice of Rajayoga, when a practitioner awakens all the 7 knowledge centers (*chakras*) within the head and spine (*mooladhaar, swadhishthaan, manipur, anahat, vishudhi, aagyaa, sahasraar*), the practitioner is known as a *Chakravarty Raja.*

By the practice of Rajayoga (Kriyayoga), when a practitioner awakens all the 7 knowledge centers (*chakras*) within the head and spine (*mooladhaar, swadhishthaan, manipur, anahat, vishudhi, aagyaa, sahasraar*), the practitioner is known as a *Chakravarty* Raja.

The definition of *Raja* in the ancient times was very different from the present definition of *Raja*. In ancient times, *Raja* was one who was an expert in *Rajayoga* or, in other words, Kriyayoga. The citizens under the leadership of such a *Raja* were well looked after. However, due to the effect of the dark ages (*Kaliyuga*) , as the hidden knowledge of the subtle scientific technique contained in the scriptures was lost, a new definition of the term "*Raja"* emerged. Those who were hungry for power, wealth and post and wanted governance over the people in all ways possible, in order to acquire wealth from them, came to be known as *Raja*.

The true definition of *Raja* is one who is a master of *Rajayoga* and thus, automatically holds a position of governance. This *Raja* can be said to be a true politician. A politician is one who is in politics. Politics is derived from the word polite / politeness. The term polite refers to being humble. Therefore, only by the practice of Kriyayoga can one become polite or humble and a true politician. By the practice of Kriyayoga, as one heads towards Truth and manifests Infinite humbleness within, one becomes instrumental to ensuring the true service and protection of rivers, mountains, lakes, oceans, trees and plants, animals and human beings.

The great spiritual political saint, Mahatma Gandhi ji, practised Kriyayoga daily. Therefore, Gandhi ji was able to exhibit such a great height of humbleness. Gandhi ji was able to place himself in the heart of the British through the Omnipotent spiritual power of Truth and Non-violence, love and forgiveness. Mahatma Gandhi ji referred to Kriyayoga also as "Bengali exercises" because his Guru – Sri Paramhansa Yogananda ji, was from Bengal. Sri Paramhansa Yogananda ji initiated Mahatma Gandhi ji into Kriyayoga and advised Gandhi ji never to reveal about the initiation steps to anyone without written permission. Obediently following the advice of his Guru, Gandhi ji therefore never even used the term of Kriyayoga. Before leaving Gandhiji's ashram in Wardha, Paramhansa Yogananda ji expressed his idea and said to him, "Mahatama ji, India is save in your keeping." *

Mahatma Gandhi ji referred to Kriyayoga also as "Bengali exercises" because his Guru – Sri Paramhansa Yogananda ji, was from Bengal. Sri Paramhansa Yogananda ji initiated Mahatma Gandhi ji into Kriyayoga.

Paramhansa Yogananda ji with Mahatma Gandhi ji in his ashram in Wardha

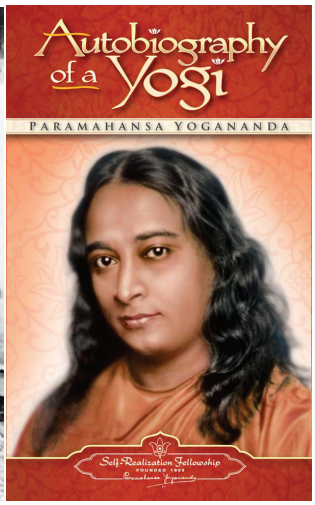

राजयोग, राजा तथा राजनीति का वास्तविक स्वरूप

राजयोग (क्रियायोग) के ज्ञाता को राजा कहा जाता था ।
राजयोग के अभ्यास द्वारा जब मनुष्य अपने सिर व रीढ़ के अंदर स्थित सप्त चक्रों (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनहत, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्त्रार) को जागृत कर लेता है तो उसे चक्रवर्ती राजा कहा जाता था ।

इतिहास गवाह है कि भारत के लोगों ने किसी दूसरे देश की जमीन हथियाने के लिए आक्रमण नहीं किया। किसी पर अपने विचारों को थोपने का अत्याचार नहीं किया। वहीं पर विश्व में अनेक धर्माचार्य व शासक हुए हैं जिन्होंने क्रूरता के साथ दूसरे की जमीन पर कब्जा किया और वहां के नागरिकों को भयभीत करके अपनी राह पर चलने को बाध्य किया। भारत ने ऐसा कभी नहीं किया। भारत की महिमा को प्रकाशित करने के लिए आवश्यक है कि हम सभी लोग पूरी निष्ठा और भक्ति के साथ वैज्ञानिक तरीके से अपने अंदर परमात्मा की खोज करके सुषुप्त अनन्त ज्ञान, शांति, शक्ति को प्रकाशित करें।

अपने अंदर परमात्मा को खोजने की सरलतम्, श्रेष्ठतम्, पूर्ण, वैज्ञानिक, आध्यात्मिक प्रविधि क्रियायोग ध्यान है। क्रियायोग ध्यान को शास्त्रों में राजयोग भी कहा गया था। राजयोग के ज्ञाता को राजा कहा जाता है । राजयोग के अभ्यास द्वारा जब मनुष्य अपने सिर व रीढ़ के अंदर स्थित सप्त चक्रों (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनहत, विशुद्धि, आज्ञा, सहस्त्रार) को जागृत कर लेता है तो उसे चक्रवर्ती राजा कहा जाता है। इस प्रकार प्राचीन काल में राजा का स्वरूप वर्तमान से पूर्णतया भिन्न था। पहले वही व्यक्ति राजा होता था जो राजयोग अर्थात् क्रियायोग ध्यान का पूर्ण ज्ञाता हो । ऐसे राजा के द्वारा ही प्रजा की सच्ची सेवा होती थी । कालान्तर में मानव मस्तिष्क के ज्ञान का ह्रास होने पर मनुष्य शास्त्रों में वर्णित सूक्ष्म साधनाओं के गूढ़ रहस्यों को विस्मृत कर गया । ऐसी अवस्था में वे लोग राजा बनने लगे जो मात्र धन, पद के भूखे थे तथा जिनका एकमात्र लक्ष्य था किसी भी प्रकार से जनता में अपना शासन कायम करके धन उगाही करना । सच्चा राजा वह है जो राजयोग का अभ्यास करता है । राजनीति का अनुवाद पॉलिटिक्स (Politics) है । पॉलिटिक्स (Politics) शब्द पोलाइटनेस (Politeness) से बना है। पोलाइटनेस (Politeness) का अभिप्राय विनम्रता से है । मनुष्य के अंदर सच्ची विनम्रता तभी प्रकट हो सकती है जब वह क्रियायोग ध्यान का अभ्यास करता है । क्रियायोग ध्यान के द्वारा जब मनुष्य आत्मज्ञान के मार्ग पर आगे बढ़ता है तो उसके अंदर अनन्त विनम्रता प्रकट हो जाती है और ऐसे मनुष्यों के द्वारा नदी, पहाड़, झील, समुद्र, पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, मानव आदि सभी की सच्ची सेवा और सुरक्षा होती है । भारत के महान आध्यात्मिक राजनीतिक संत महात्मा गॉधी जी प्रतिदिन क्रियायोग का अभ्यास करते थे । इसीलिए उनकी विनम्रता अनन्त थी । उन्होंने सत्य, अहिंसा, प्रेम और क्षमा रूपी दिव्य शक्तियों के द्वारा अँग्रेजों के हृदय में स्थान प्राप्त किया था । महात्मा गॉधी जी क्रियायोग ध्यान को बंगाली एक्सरसाइज के रूप में व्यक्त करते थे क्योंकि उनके गुरू श्री परमहंस योगानन्द जी बंगाल के थे । वे प्रतिदिन क्रियायोग ध्यान का अभ्यास करते थे जिसका उल्लेख दि एन्ड ऑफ एन एपोक नामक पुस्तक में स्पष्ट रूप से दिया गया है । "I practice Bengali exercise everyday. " - *The End of an Epoch* श्री परमहंस योगानन्द जी ने महात्मा गॉधी जी को क्रियायोग की दीक्षा दी थी और उनके आध्यात्मिक गरिमा को प्रणाम करते हुए कहा था कि महात्मा आपके हाथों में भारत सुरक्षित है ।

श्री परमहंस योगानन्द जी ने लॉस ऐन्जिलिस के बिल्टमोर होटल में आयोजित एक भोज में 50 देशों के दूतावास के राजदूत एवं गणमान्य व्यक्तियों के सम्मुख अंतिम व्याख्यान देते हुए पूर्ण आध्यात्मिक गरिमा के साथ महासमाधि में प्रवेश किया तथा उन्होंने भारत में पुनः जन्म लेने की आत्मिक इच्छा व्यक्त करते हुए कहा था – "O INDIA, I WILL BE THERE!" "हे भारत, मैं वही आऊँगा!" महासमाधि के अवसर पर श्री परमहंस योगानन्द जी ने महात्मा गॉधी जी को महान पैगम्बर के रूप सम्बोधित करते हुए कहा था कि विश्वव्यापी समस्याओं के निराकरण के लिए महात्मा गॉधी जी ने प्रभु ईसा के सिद्धान्तों को राजनीति में लागू करके एक अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत किया है जिसका अनुकरण विश्व के सभी राष्ट्रों को करना चाहिए । श्री परमहंस योगानन्द जी ने महात्मा गॉधी के प्रति अपने आत्मिक उद्‌गार को इस प्रकार व्यक्त किया था –

"I remember my meeting with Mahatma Gandhi. The great Prophet brought a practical method for peace to the warring modern world. Gandhi, who for the first time applied Christ principles to politics and who won freedom for India, gave an example that should be followed by all nations to solve their troubles." -- Paramahansa Yogananda In Memoriam

श्री परमहंस योगानन्द जी के साथ वर्धा में अपनी भेंट के दौरान महात्मा गॉधी जी ने अपने सिद्धान्तों को वर्णित करते हुए कहा है, ''इतिहास इस बात का साक्षी है कि मनुष्य की समस्याएँ पाशविक शक्ति के प्रयोग से हल नहीं हुई हैं। युद्ध और अपराध कभी लाभप्रद नहीं होते । अरबों डालर विस्फोट पदार्थों का धुआँ बन कर शून्य में मिल गया । इस धनराशि से तो रोग और दरिद्रता से पूर्णतः मुक्त एक नये विश्व का निर्माण ही हो सकता था। भय, अराजकता, अकाल और महामारी आदि के प्रलय नृत्यों का रंगमंच न बन कर पृथ्वी शान्ति, समृद्धि और ज्ञान–प्रसार का व्यापक क्षेत्र बन जाती। मैं भारत को शक्तिशाली देखना चाहता हूँ , ताकि वह अपनी शक्ति से अन्य राष्ट्रों में भी शक्तिसंचार कर सके । '' – *योगी कथामृत श्री परमहंस योगानन्द* *

'अखण्ड भारत सन्देश' का उद्देश्य

''अखण्ड भारत''

की शाब्दिक एवं तात्विक व्याख्या

'अ'खण्ड भारत सन्देश' विश्व के सभी राष्ट्रों को एक सूत्र में जोड़ने के लिए एक अद्वितीय समाचार-पत्र है, जिसका मुख्य लक्ष्य है - मूल सत्य को स्थापित करना। इस समाचार-पत्र की शाब्दिक व्याख्या से मूल सत्य स्वयं प्रकाशित हो जाता है। 'अखण्ड' का आशय है, अविभाज्य और 'भारत' का आशय है 'भा' से रत । भा का अभिप्राय सम्पूर्ण ज्ञान से है। भारत ज्ञान युक्तावस्था का संबोधन है जो सदैव अविभाज्य है। जब मनुष्य इस अवस्था में होता है तो उसके द्वारा दिया गया संदेश सदैव सत्य होता है।

इस समाचार-पत्र का उद्देश्य है, पूरे विश्व की ऐसी घटनाओं को प्रकाशित करना जो मानव को मानव से, राष्ट्र को राष्ट्र से, पुरुष को प्रकृति से तथा आत्मा को परमात्मा से जोड़ने में मदद करें। 'अखण्ड भारत संदेश' सनातन भारतीय संस्कृति ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' की भावना का पूरे विश्व में विस्तार करेगा।

''अखण्ड भारत संदेश'' के व्यापक स्वरूप को विस्तार से समझने के लिए ''अखण्ड भारत'' शब्द पर ध्यान दें । ''अखण्ड'' अवस्था को ही योग की अवस्था कहा गया है जिसमें स्थित होने पर स्पष्ट ज्ञान हो जाता है कि दृश्य व अदृश्य जगत एक अविभाजित परम तत्व है। अखण्ड अवस्था को ही सत्य अनुभूति की अवस्था कहा गया है। क्रियायोग ध्यान के द्वारा योग अवस्था के प्रकट होने पर मनुष्य अनुभव कर लेता है कि सुख–दुःख, पाप–पुण्य, माया–ब्रह्म आदि समस्त द्वैत अनुभूतियॉ स्वप्नवत् हैं । सत्य केवल एक है अमरता, अद्वैत की अनुभूति।

''भारत'' शब्द की विस्तृत व्याख्या करने पर स्पष्ट होता है कि ''भारत'' शब्द 'भा' तथा 'रत' दो शब्दों को मिलकर बना है। 'भा' का अभिप्राय ज्ञान से है तथा 'रत' का अभिप्राय पूरी तरह से जुड़ने से है । ज्ञान तीन प्रकार का है । ब्रह्मा का ज्ञान अर्थात् सृजन करने का ज्ञान, विष्णु अर्थात् संरक्षण करने का ज्ञान तथा शिव अर्थात् परम कल्याणकारी परिवर्तन करने का ज्ञान । जब मनुष्य अपने स्वरूप को अखण्ड स्थिति में अनुभव करता है तो उसे अपना अस्तित्व ब्रह्मा (सृजन), विष्णु (संरक्षण) व शिव (परिर्वतन) में निहित पूर्ण ज्ञान तत्व के रूप में दिखाई देता है। ऐसी अवस्था में अनुभव हो जाता है कि मनुष्य का स्वरूप सर्वज्ञ तत्व है ।

अखण्ड भारत संदेश उपरोक्त वर्णित संदेश के गूढ़ रहस्य को व्यक्त करता है । जैसे–जैसे इस भाव का विस्तार होगा वैसे–वैसे भारत राष्ट्र का निर्माण होगा और राष्ट्र निर्माण की यह प्रक्रिया प्रारम्भ हो गयी है। आगे आने वाले 15 वर्षो के अन्दर भारत अपने शक्तिवान और ज्ञानवान स्वरूप में प्रकट होकर सम्पूर्ण विश्व की उच्चतम् सेवा करेगा ।

अखण्ड भारत संदेश का मुख्य लक्ष्य है, हर मानव को अपने अंदर स्थित अखण्ड ज्ञान–प्रवाह से परिचित कराना, ताकि समाज को संकीर्णता के दायरे से ऊपर उठाकर विराट विश्व का दर्शन कराया जा सके । इस समाचार-पत्र के विस्तार से समाज के सारे अंग - शिक्षा, चिकित्सा, व्यापार, राजनीति आदि के स्वरूप में युगानुकूल परिवर्तन होगा । प्रत्येक देश की शिक्षा व्यवस्था सर्वोच्च स्थान पर होगी, जिसमें शिक्षित व्यक्ति रोजगार की दृष्टि से आत्म-निर्भर होगा। मानव-मानव के बीच एकता व प्रेम का शाश्वत् सम्बन्ध स्थापित होगा। एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जो भारतीयता, वैज्ञानिकता तथा कर्मठता व आध्यात्मिकता की शाश्वत् व संयुक्त शक्ति के जीवन्त रूप को प्रकट करेगा।

विशेष: क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मनुष्य को अनुभव हो जाता है कि उसका स्वरूप और दृश्य जगत अनन्त सर्वव्यापी अदृश्य शक्ति का प्रकाश है। जिस प्रकार लहर विशाल समुद्र की अभिव्यक्ति है। लहर और समुद्र दो नही हैं। ठीक उसी तरह दृश्य जगत भी लहर के रूप में है, जो सर्वव्यापी अनन्त निराकार की अभिव्यक्ति है। *

Akhand Bharat Sandesh

Aim and Objects

Its main objective is to connect all nations together and to bring the realization in the Consciousness of human beings that the whole world is One Home and that all members of the Home are Children of God, fully charged with Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. The name of Akhand Bharat reveals the same meaning. Akhand means undivided. Bharat means oneness with complete knowledge. Complete knowledge is known as Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent Consciousness. Sandesh means message. The message of Akhand Bharat Sandesh will be delivered everywhere in bilingual language (Hindi and English).

Anyone who is charged with the thought that the whole world is One Home and that each and every person of the Home is a child of God, is a perfect person to serve like a Prophet. The nature of child of God is Omniscient, Omnipotent, Immortal and Omnipresent.

It is practically observed that the joyful devoted practice of Kriyayoga Meditation brings the same realization easily and quickly. Akhand Bharat Sandesh will spread this message everywhere and has decided to light the lamp of Kriyayoga Meditation in all homes of the world. The moment this newspaper will reach all persons of the world through the print, electronic and internet media, then heaven on the earth will be observed. *Vasudhaivakutumbakam* will be celebrated by the majority of persons. Vasudhaivakutumbakam means the whole world is one home. This thought will automatically change all branches of education such as engineering, medical, philosophy, social science etc. Then all places of the world will become rich with all the facilities needed by human beings and thus, become most suitable to live in. *

*

... continued from Page 1

government, administration and judiciary have become very outdated and everyone is feeling great suffocation. There are many unnatural, unholy concepts of life – caste-ism, sectarianism, and segregation on the basis of colour and religion. We also have tendencies of regionalism where we think that a region is great because we are from the region. However, because of an inner awakening within to the concept that the whole world is ONE Home, it is becoming more and more difficult to accept the laws and rules based on the concepts of regionalism and division based on caste, colour and religion.

Because we have become more evolved and expanded in our thought, the Constitution of the nation, legislation, administration and judiciary have become ineffective. There has been a development in all walks of life and our consciousness is expanding more and more. We, therefore, need a change of the constitution of the nation, legislation, administration and judiciary.

How do we make this change? It is possible to change the system very easily if we have the practical knowledge of Kriyayoga Science and when we are able to practise Kriyayoga Meditation in all states – while resting, working, in awake condition, in dream and in sleep. Today, Kriyayoga will work like the Divine Mother. It will break the shell of ignorance and we will be liberated like the chick from an egg and enjoy the vastness of our existence.

Kriyayoga is a time-tested technique. If we practise it, we will be above caste, colour, creed and regional feeling. Kriyayoga Meditation is the fastest and easiest way to feel joy, peace, power and knowledge everywhere all the time.

Take, for example, unity in a home. Unity is brought about by any one person who readily solves the problems of everyone in the home. Such a person automatically becomes the head of the home and serves everyone like a wise humble servant. Similarly, to be the leader of a nation, one has to be equipped with care and concern and love to help all the citizens of the nation, by providing appropriate services and facilities to the citizens to help them solve their problems. In order to have deeper level love for the society, one has to practice Kriyayoga Meditation. *

To be the leader of a nation, one has to be equipped with care and concern and love to help all the citizens of the nation, by providing appropriate services and facilities to the citizens to help them solve their problems. In order to have deeper level love for the society, one has to practice Kriyayoga Meditation.

– पृष्ठ 1 का शेष .....

वर्तमान आरोही द्वापर युग में हमारी समझने की सामर्थ्य बहुत अधिक बढ़ गयी है।

हम अब पहले से अधिक विकसित हो गये हैं । हम जातिवाद, सम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता आदि के सीमित आवरण में कूपमण्डूपता से बाहर आना चाहते है। वर्तमान समय में राष्ट्र के सभी अंग – अध्यात्म, शिक्षा, चिकित्सा, राजनीति, व्यापार, शासन–प्रशासन, न्यापालिका आदि बौनी पड़ गयी हैं । वे सभी सिद्धान्त व नियम जिस पर समाज के सभी अंग काम कर रहे हैं, क्षमताहीन हो गये हैं । राष्ट्रव्यापी समस्याओं के निराकरण के लिए इन क्षमताहीन सिद्धान्तों व नियमों के आधुनिकीकरण की अनिवार्य आवश्यकता है। अब समयानुकूल नये प्रकार की नियमावली बनाये जाने की आवश्यकता है जिससे भारतराष्ट्र के प्रत्येक नागरिकों की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और भारतराष्ट्र के सुषुप्त गौरव को जागृत किया जा सके ।

क्रियायोग ध्यान की शिक्षा दिव्य मॉ के रूप में है जो अज्ञानता के आवरण (शेल) को तोड़ देगी और फिर हम जातिगत बीमारियों, साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता आदि के कुप्रभाव से मुक्त होकर उन्मुक्त खुले वातावरण में श्वॉस लेंगे । क्रियायोग के विस्तार से मानव की सम्पूर्ण जीवन पद्धति बदल जायेगी । विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका तथा आध्यात्मिक परिवेश व्यवस्थित हो जायेंगे और सभी लोग सुख और शांति से जीवन व्यतीत करेंगे । *

Kriyayoga Practitioners at Kriyayoga Ashram & Research Institute, Allahabad, Uttar Pradesh, India

*

TIMINGS OF KRIYAYOGA MEDITATION CLASSES

ALL DAYS OF THE WEEK except SUNDAY -

Morning : 4:00 am to 5:30 am, 11:00 am to 11:30 am * Afternoon : 2:15 pm to 3:00 pm * Evening : 5:30 pm to 7:00 pm

SUNDAYS - ***Morning : 7 am to 10:00 am * Evening : 5:30 pm to 7:00 pm***

आईएएस के चयन का तरीका बदलना सुनिश्चित

– स्वामी श्री योगी सत्यम्

आईएएस एसोसिएशन द्वारा निलंबन के तरीके को बदलने की मांग पर क्रियायोग वैज्ञानिक की प्रतिक्रिया

आईएएस अधिकारियों के बंगलों की सफाई व रख रखाव में खर्च हो रही मोटी रकम

आम जनता परेशान रहती है, उनसे मिलते नहीं अधिकारी, फोन करने पर साहब व्यस्त हैं जवाब देता है चपरासी

अभासं संवाददाता

इलाहाबाद । विश्व प्रसिद्व क्रियायोग वैज्ञानिक व क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान के संस्थापक अध्यक्ष परम पूज्य गुरूदेव स्वामी श्री योगी सत्यम् जी महाराज ने कहा कि निलंबन से आईएएस के कार्यप्रणाली में केवल आंशिक परिवर्तन ही संभव है । अब तंत्र (System) बदलने की आवश्यकता है। निलम्बन के बजाय आईएएस अधिकारियों के चयन का तरीका ही बदल दिया जाय। उन्होंने कहा कि परिवारों में कम पढ़ी लिखी एवं अनपढ़ बूढ़ी दादी, माताएँ अपने पूरे परिवार को कितने सुन्दर ढ़ंग से चलाती हैं । दादी मॉ सबसे पहले परिवार के अन्य सभी सदस्यों को खाना खिलाने–पिलाने से लेकर सभी आवश्यक सुविधाएँ मुहैया कराने के बाद अंत में अपने लिए कुछ सोचती हैं। उसके इसी व्यवहार के कारण कई पीढ़ियों के लोग दादी मॉ के कुशल नेतृत्व में एक संयुक्त परिवार के रूप में रहकर अपने को सुखी अनुभव करते हैं। श्री महाराज जी गत दिनों यहॉ क्रियायोग आश्रम के श्री महावतार बाबा वटवृक्ष परिसर के नवीन क्रियायोग ध्यान केन्द्र में क्रियायोग ध्यान की साधना कराने के बाद आईएएस एसोसिएशन द्वारा केन्द्र सरकार से उनके निलंबन का तरीका बदलने की मॉग पर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने केन्द्र सरकार को सुझाव देते हुए कहा कि आईएएस लॉबी को बहुमुखी सेवा प्रणाली से सुसंस्कृत और प्रशिक्षित होनी चाहिए। इस प्रकार के अधिकारी तभी अपना निर्णय सही दे सकते हैं तथा जिले की जनता को सुखी और संतुष्ट रख सकते हैं जब वे दादी मां की तरह जिले के लोगों से बर्ताव करें। किताब पढ़कर उसे रटकर परीक्षा पास कर लेने मात्र से यह कार्य संभव नहीं है। क्योंकि किताब को पढ़ने और रटने का कार्य तो कम्प्यूटर और रिकार्ड प्लेयर भी कर लेता है। आईएएस अधिकारियों की जिले में तैनात रहने की सार्थकता तब सिद्व होगी जब जिले के लोगों को सुखी कर सकें, जिले में शांति स्थापित कर रहे, एक दूसरे से किसी प्रकार झगड़ा–फसाद न हो, सच्ची शिक्षा की ओर अग्रसर हो, छोटी–छोटी बातों को लेकर थाना और कोर्ट में न जाना पड़े। परन्तु उक्त अधिकारियों द्वारा ऐसा करना तो दूर की बात रही, वे तो इस तरह का माहौल पैदा हो, इसके लिए सोचते भी नहीं हैं। इस तरह के अधिकारी स्वयं तो कीमती बंगलों में रहते हैं, उनकी सेवा आदि के लिए कई नौकर चाकर तथा आने–जाने के लिए कई वाहन आदि चौबीसों घंटे उपलब्ध रहते हैं। वे जिले की आम जनता की सुविधा के लिए पांच प्रतिशत भी नहीं सोचते। जिले के डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट और मंडलायुक्त के बंगलों को ही देख लिया जाय । इनके बंगले ऐसे हैं कि महीने में लगभग पचास हजार रुपये से लेकर एक लाख रूपये तक और कभी–कभी उससे भी अधिक तो उनके रखरखाव, सफाई व सुरक्षा आदि में ही खर्च हो जाते हैं। यदि इन पैसों का दुरुपयोग रोक कर यह भारी भरकम धनराशि आम जनता में खर्च हो तो विकास की शान्तिमय क्रान्ति आ जाएगी।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी कहा कि आईएएस अधिकारी जो किताबों को रटकर परीक्षा पास कर यहॉ आये हैं। उनको आम जनता का दुख दर्द दूर करने का ज्ञान ही नहीं है । उनको तो ''अपना काम बनता, भाड़ में गयी जनता'' की कहावत ही ठीक लगती है। वे सबसे पहले अपनी सुख सुविधाओं का ध्यान रखते हैं, उसके बाद अपने सगे सम्बन्धियों को सुख सुविधाएँ उपलब्ध कराने का कार्य करते हैं तथा अंत में जब कुछ शेष रहा तो

– शेष पृष्ठ 7 पर

समस्त सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं के निराकरण के लिए शिक्षा नीति में परिवर्तन आवश्यक है । वर्तमान शिक्षा प्रणाली में हम पढ़ते कुछ हैं और करते कुछ और हैं । आज उस शिक्षा की आवश्यकता है जिसमें शिक्षित होने पर विद्यार्थी स्वयं अपनी नई सूझ–बूझ एवं कर्मों द्वारा रोजगार का केन्द्र बन जाय । आज लिखकर, पढ़कर, याद करने नहीं बल्कि लिखें पढ़े गये तथ्य को अनुभव करके उसका ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है । क्रियायोग ध्यान एक पूर्ण शिक्षा है । क्रियायोग ध्यान के अभ्यास से मनुष्य सत्य व असत्य का ज्ञान प्राप्त कर लेता है तथा अनुभव कर लेता है कि उसका स्वरूप तथा ब्रह्माण्ड का प्रत्येक कण अमर तत्व, सत्य तत्व, सर्वज्ञ तत्व, सर्वशक्तिमान तत्व, सर्वव्यापी तत्व, पूर्ण तत्व का प्रकाश है।

– पृष्ठ 6 का शेष .....

आम जनता को परोस कर अपने कर्तव्यों की इति श्री कर लेते हैं। उनकी इस कार्य प्रणाली से भला कैसे जिले की जनता सुखी व संतुष्ट रह सकती है। स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने कहा कि परिवार में यदि कोई एक भी सदस्य किसी बात को लेकर परेशान होता है तो परिवार के मुखिया की रात की नींद हराम हो जाती है। वह जब तक अपने उक्त सदस्य का दुख दूर नहीं करा लेता तब तक चैन की सांस नहीं लेता।

उसके विपरीत आईएएस अधिकारी जो कभी पैदल नहीं चलते, आम लोगों से मिलते नही, मोबाइल फोन रिसीव नहीं करते, लैण्ड लाइन पर फोन करने पर उनका अर्दली व चपरासी कहता है कि साहब सो रहे हैं, बाथरूम में हैं, पूजा कर रहे हैं, व्यस्त हैं, दौरे पर गये हैं ..... । साहब किस काम में व्यस्त हैं ? चपरासी यह नहीं बता पाता। दिन भर में जब भी लैण्ड लाइन के फोन पर काल किया जाय तो चपरासी यही कहता है साहब व्यस्त हैं या दौरे पर गये हैं। उक्त आईएएस अधिकारी जानने का प्रयास ही नहीं करते कि आम जनता की मूलभूत समस्याएँ क्या हैं ? इस तरह व्यवहार करके वे जिला व समाज का क्या भला कर सकते हैं? उन्हें तो कायदे से रात में नीद नहीं आनी चाहिए कि उनके जिले की आम जनता विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है और वह चैन की नीद सो रहे हैं । इसके लिए सरकार तो चाहे भले ही उन्हें माफ कर दे परन्तु परमात्मा कभी नहीं माफ करेगा। श्री महाराज जी ने कहा कि कर्तव्य का पालन न करने से नर्क की यातना भोगनी पड़ती है। आईएएस अधिकारी ऐसे होने चाहिए जिनकी कार्य प्रणाली से मनुष्यों के अलावा जीव–जन्तु , पेड़–पौधे, नदी, पहाड़, झरना आदि सभी सुखी हों। इन सभी अलौकिक रचनाओं की उपयुक्त सेवा के लिए क्रियायोग ध्यान सर्वोत्तम साधन है। श्री महाराज जी ने कहा कि आईएएस अधिकारी यदि क्रियायोग ध्यान के माध्यम से अपने में सुधार लाना चाहते हों तो उन्हें आवश्यकतानुसार सभी जानकारियॉ उपलब्ध करा दी जायेंगी।

स्वामी श्री योगी सत्यम् महाराज जी ने कहा कि आईएएस अधिकारियों द्वारा केन्द्रीय कार्मिक राज्य मंत्री से मिलकर यह मांग की जा रही है कि उनके निलंबन का तरीका बदला जाना चाहिए। यही नहीं उन्होंने यह भी मांग की है कि उनके निलंबन के पूर्व प्रदेश सरकार को केन्द्र सरकार से अनुमोदन लिया जाना चाहिए। जबकि होना यह चाहिए कि आईएएस अधिकारियों के चयन के तरीके बदले जाने चाहिए। नये तरीकों मे जिले के लोगों की समस्याओं को दादी मॉ की तरह सुनने और उनकी तरह व्यवहार करने के प्रशिक्षण देने आदि की व्यवस्थाएँ शामिल की जानी चाहिए। अपनी नई सूझ–बूझ द्वारा कैसे पूरी जनता का भला हो तथा किसी प्रकार सबको न्याय एवं समृद्धि की प्राप्ति हो ? इन नियमों की आवश्यकता है । ऐसा होने पर ही आईएएस अधिकारी अपने कर्तव्यों का पालन पूरी ईमानदारी व निष्ठा से करके आम जनता को सुखी व संतुष्ट रख सकते हैं।

आईएएस अधिकारियों के द्वारा किस प्रकार राष्ट्रीय कार्य में बाधा पहुँचायी जाती है, को स्पष्ट करते हुए श्री महाराज जी ने कहा कि देश निर्माण के लिए कृत संकल्प अखण्ड भारत सन्देश जो इसके पूर्व तक दैनिक रूप में प्रकाशित हो रहा था, को पाक्षिक रूप से निकालने हेतु अनुमोदन के लिए एसडीएम फूलपुर के कार्यालय में 25 जून को घोषणा पत्र प्रस्तुत किया गया था मगर उन्होंने अनुमोदन करने के बजाय प्रस्तुत किये गये आवेदन पत्र को ही अपनी अज्ञानता के कारण निरस्त कर दिया। अनुमोदन के लिए अब दोबारा घोषणा पत्र प्रस्तुत किये जाने पर वह जांच आदि के नाम पर प्रकरण को कई दिनों से लटकाये रहे। यह अमानवीय व्यवहार ठीक उसी प्रकार है जिस प्रकार महात्मा गॉधी जी के साथ अँग्रेजों ने किया था । महात्मा गॉधी जी ने जब अँग्रेजों के अत्याचार को समाप्त करने के लिए समाचार पत्र निकालना चाहा था तो अँग्रेजों ने उन्हें अनुमोदन नहीं दिया । आज भारत के कुछ आईएएस अंग्रेज व मुगलों से भी आगे है। अखण्ड भारत सन्देश जिसकी आरएनआई 2000 ई0 में ही प्राप्त हो चुकी है जिसका प्रकाशन हो रहा है और अब वर्तमान में द्विभाषीय (हिन्दी/अँग्रेजी) पाक्षिक समाचार पत्र के रूप में प्रकाशित करने हेतु उप जिलाधिकारी द्वारा अभिप्रमाणित घोषणा पत्र 26 अगस्त 2013 को प्रदान कर दिया गया है जिसका प्रवेशांक 1–15 सितम्बर प्रकाशित किया जा चुका है। मात्र डीएम और एसडीएम के अराष्ट्रीयता के कारण अखण्ड भारत सन्देश के द्विभाषिक पाक्षिक होने के मामले को लटकाया जा रहा था। नियमतः ये अधिक समय तक अनुमति प्रदान करना रोक नहीं सकते थे। आशुतोष निरंजन प्रशिक्षु आईएएस ने विवश होकर घोषणा पत्र को अभिप्रमाणित कर दिया। इस तरह का इनका व्यवहार राष्ट्र के विकास के विपरीत है। इस तरह अनेक आईएएस अधिकारियों के द्वारा राष्ट्रीय कार्य में बाधा पहुचायी जा रही है।

वर्ष 2000 में अखण्ड भारत संदेश का हुआ था लोकार्पण

भारत, कनॉडा और अमरीका जैसे दशों के प्रख्यात चिकित्सकों व इंजीनियरों की उपस्थिति में तथा प्रख्यात समाजविद् व ''मां की पुकार'' साहित्य के लेखक स्व0 श्री बी0पी0 सिंघल डी0 जी0 सिविल डिफेन्स (एम0पी0) राज्य सभा, इण्डियन हाई कमिश्नर कान्सलेट जनरल कनॉडा द्वारा वर्ष 2000 में किये गये अखण्ड भारत संदेश समाचार पत्र के उद्घाटन समारोह का दृश्य

गुरूदेव स्वामी श्री योगी सत्यम् जी के साथ माननीय बी0पी0 सिंघल जी व अन्य

गुरूदेव जी के मुहम्मद कैश जी

श्री ज्ञानमाता जी के साथ साधकगण (मध्य प्रदेश)

वास्तव में यह दोष आईएएस की चयन प्रणाली का है। भविष्य में क्रियायोग ध्यान के विस्तार से राष्ट्र की सम्पूर्ण समस्याओं का निराकरण होगा तथा अखण्ड भारत सन्देश राष्ट्र निर्माण में अहम भूमिका निभाएगा । **क्रियायोग के विस्तार से सम्पूर्ण नियमावली में परिवर्तन होगा तथा प्रत्येक साधक परम ज्ञानी के रूप में प्रकट होगा । जिस प्रकार दादी मॉ परिवार के लिए रोटी, कपड़ा, मकान आदि सम्पूर्ण व्यवस्थाएँ करने के बाद फिर अपने लिए कुछ सोचती है, उसी प्रकार आईएएस अधिकारियों को समाज के सभी वर्गों की आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् ही स्वयं की सुविधाओं के विषय में सोचना चाहिए । उनके लिए पूरा विश्व ही उनका परिवार होगा तथा सभी सेवा ही परम धर्म होगा। ***

Changing The Systems of The Nation To Let Shine Indian Heritage

Indian heritage is Eternal. It is glorified by the principle and philosophy that all should enjoy their existence in their own style, with the continuous joyful journey towards Oneness with Truth and Non-violence (God) . In the same way, Mughals should enjoy their Mughal-ism, British persons should enjoy their British-ism going forward in their journey towards the Ultimate aim - Oneness with God. Indians should continue to enjoy their Indian heritage

However, the Mughals were bad for India and Indians. as they invaded India and tried their best to convert Indian heritage into Mughalism. Later, when the British arrived into India, it was for the purpose of establishing The East India Company. They were warmly welcomed into India. Initially, they were instrumental to oust the Mughals. However, later, the British too started to take over governance in India, creating many problems for the Indians. They tried their best to remove the ideals of Indian heritage which were very deep-rooted in the community. Instead, they themselves started praising that Indian Heritage was a supreme lifesyle. They were unable to stand against the great spiritual political saint, Mahatma Gandhi ji, who for the first time applied the principles of Christianity to politics. As the British were themselves deeply influenced by the teachings of Jesus Christ and Moses, they could not do much harm. Indian heritage has such deep love that the British found their defeat and eventually, they had to step down and leave India. .

At present, the population of Muslims in India is maximum in the world. The Muslims of India are charged with the philosophy and principles of Indian heritage. Only some political and persons with criminal tendencies are constantly creating a division, stating that both are two. However, all Indians join in the celebrations during any Muslim festival. And during any Indian festival, all Muslims participate as well. They sit with each other to celebrate and rejoice together. However, because the political parties want to maintain their positions and posts, they create fight in the community.

Whenever anyone starts fighting, their wisdom ceases to function properly. The Hindus and Muslims who become involved in fighting and affected by the situation., become ignorant This brings about segregation of the communities and division appears.

In reality, there is no division of communities. Division is brought about by persons with posts. If there were no posts such as that of Minister, Prime Minister, Chief Minister, President and others, then there will not be communal fights. Instead, all these posts should be renamed to be known as humble servants of society. Then fights will stop. Posts authorize persons to take whatever money they want in any way they want. Having a post, one can also take the help of the police to do whatever is required. All weak persons want posts. All persons who live the philsophy and principles of Indian heritage do not require any posts because they are one with Truth.

Let us take the example of Mahatma Gandhi ji. He was against the idea that anyone should be disturbed, regardless of whether they were Muslims, British or of Indian heritage. Gandhi ji believed that all should be allowed to exist. However, when this was not happening, and the Indians were tortured by

Akhand Bharat Sandesh Inauguration Ceremony - Sept 2000

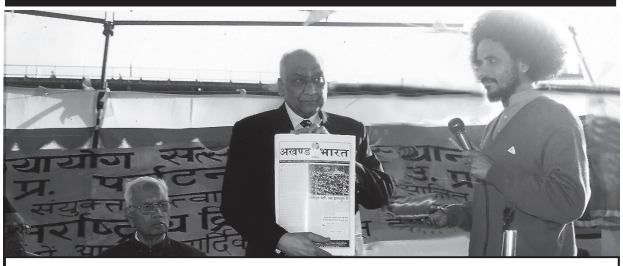

Guruji Swami Shree Yogi Satyam with Late Shri B.P. Singhal displaying the first edition of the paper

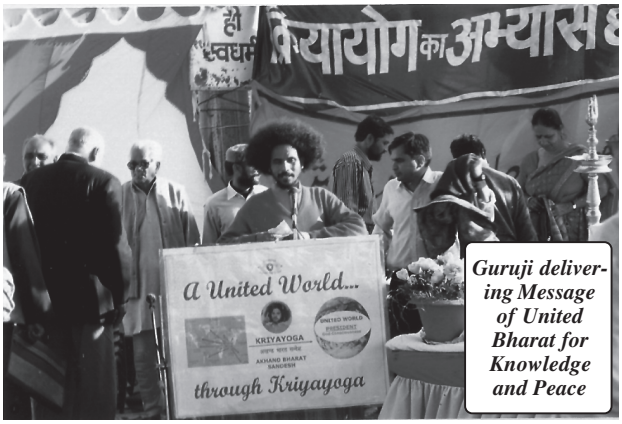

Guruji delivering Message of United Bharat for Knowledge and Peace

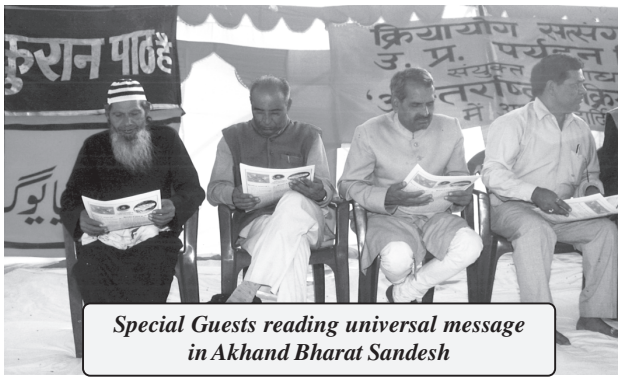

Special Guests reading universal message in Akhand Bharat Sandesh

In reality, there is no division of communities. Division is brought about by persons with posts. If there were no posts such as that of Minister, Prime Minister, Chief Minister, President and others, then there will not be communal fights. Instead, all these posts should be renamed to be known as humble servants of society. Then fights will stop. Posts authorize persons to take whatever money they want in any way they want. Having a post, one can also take the help of the police to do whatever is required. All weak persons want posts. All persons who live the philsophy and principles of Indian heritage do not require any posts because they are one with Truth.

... continued from previous page

The British and many others, Gandhi ji decided to spread the message of Indian heritage – the science of Non-Violence. He found it very difficult to spread the message because at that time, the functionality of electronics and communications, radio and television was very limited. There were also no computers, cell phones and internet as it is today. Therefore, Gandhi ji decided to publish newspapers. However, the British did not allow him to publish them. Mahatma Gandhi still carried on to do so. Eventually, he managed to change the laws and publish 4 different newspapers.

You will be surprised that even today, this condition exists. The British are not Indians. They were not having any motherly love for India. However, some IAS officers today are worse than the British and some important examples need to be quoted here. Akhand Bharat Sandesh was inaugurated by the great nationalist – the Late Shri Bhartendu Prakash Singhal (B.P. Singhal - IPS and Member of Parliment), who is also the writer of "Ma ki Pukaar", a great classical scripture. He was holding a high-level important post. He was a unique police officer who was famous in all the police divisions. In the presence of Late Shri B.P. Singhal , Indian Diplomat Mr Dubey, and many other dignitaries of America and Canada (doctors, scientists, engineers…) , the Akhand Bharat Sandesh newspaper was inaugurated in 2000. NRIs were also present.

Akhand Bharat Sandesh became the highest-selling evening newspaper in Allahabad. Other newspapers are not able to transform the human mind. Therefore, in Akhand Bharat Sandesh, it was decided that bilingual editorials will be published. In order to do so, a new declaration had to be made in order to continue publishing Akhand Bharat Sandesh in a different format. However, the District Magistrate (DM) , Raj Shekkar, and the Sub-Divisional Magistrate (SDM) , Ashutosh Niranjan, were not giving the declaration letter even though more than a month had passed.

Raj Shekkar, from Bangalore, is the least concerned with the affairs of Allahabad, Uttar Pradesh. He should have taken some action against the anti-national work of officers like Ashutosh Niranjan. However, he did not take action because he is not interested in the development of India.

Ashutosh Niranjan (IAS) working as a trainee SDM presently, has been recorded saying that he has limited mental perceptions and capacity and therefore, he is not able to settle matters properly. Reality, however, is something different. When he has to work against constructive national development work, he becomes most active, bright and capable so that he may stop the good work. This is known as anti-development tendency.

This simple matter of granting a new declaration for the reformatted Akhand Bharat Sandesh should not have taken more than a day, however, it took **two months** and many unnecessary trips to the office. The moment SDM Ashutosh Niranjan came to know that legally he could not decline the declaration, as an earlier RNI had already been granted in September 2000, he signed the paper unwillingly. This example clearly shows how an IAS (Indian Administrative Services) officer like him, one who is still under training, had no fear at all to work against the development of India and humanity. In fact, an IAS officer like Ashutosh Niranjan is truly the worst for progress of India and service to humanity.

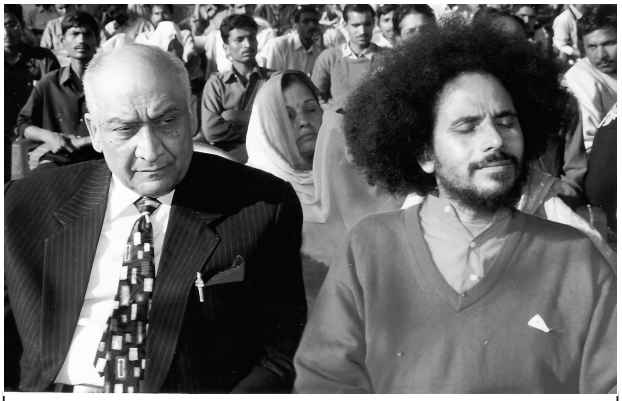

Guruji with Late Shri B.P. Singhal during inauguration of Akhand Bharat Sandesh in 2000

Guruji Swami Shree Yogi Satyam welcoming Shri Akhilesh Yadav (Chief Minister, U.P.) to the Kriyayoga Ashram & Research Institute in Allahabad, U.P., India in January 2013

Akhand Bharat Sandesh spreading message of Indian heritage abroad in North America

If we go into the details of the matters, it is truly not the mistake of any one person in particular. The present systems are incomplete to prepare one to manage the work in the correct way. The present education system is incomplete. The Constitution of India is incomplete. Very soon, all the systems will HAVE TO change and ARE going to be changed. The Constitution of India will be changed. The administrative workshop and the education system will also be changed. Within 15 years, India will have a new light in all walks of life and will be glorified with its real nature - Indian Heritage (Kriyayoga Principle and Philosophy). Then India will serve as Mother Nation of all countries of the world. *

मानव शिशु की मॉ का दूध ही उपयुक्त पोषण

क्रियायोग विज्ञान में वर्णित क्रियायोग ध्यान व आहार को जीवन में उतारने पर इच्छानुकूल संतान की प्राप्ति के साथ–साथ मॉ को अपने बच्चे के लिए लगभग तीन साल तक पर्याप्त दूध प्रदान करने की क्षमता प्राप्त होती है । मनुष्य के बच्चे के लिए गाय, बकरी या भैंस किसी भी जानवर का दूध शरीर और मन के लिए उपयुक्त नहीं है । मानव का मुख्य आहार है पूर्ण परिपक्व अनाज, फल, सब्जी तथा बीज । लगभग एक वर्ष की उम्र से ही क्रमशः प्राकृतिक परिपक्व वनस्पति जन्य घर में बने सादे भोजन को आंशिक रूप से आसानी से दिया जा सकता है । अप्राकृतिक रहन–सहन के कारण मॉ को पर्याप्त दूध न होने से बच्चे के लिए जानवरों के दूध को पिलाना पड़ता है जिससे बच्चे के सर्वांगीण विकास में बाधा होती है । जानवरों से प्राप्त दूध में प्रोटीन से मनुष्य कैंसर, ट्यूमर और अन्य बीमारियों का शिकार होता है।

गाय के दूध को पवित्र मानने का प्रचलन शास्त्रों में प्रयोग किये गये 'गो' शब्द की गलत व्याख्या से हुआ है। 'गो' का अर्थ इन्द्रियॉं हैं, गाय नहीं है । 'गोपाल' का अर्थ इन्द्रियों का रक्षक है। रक्षा का सम्पूर्ण उत्तरदायित्व विष्णु शक्ति का है । भगवान श्रीकृष्ण विष्णु शक्ति के अवतार हैं । इसी कारण भगवान श्रीकृष्ण का नाम गोपाल पड़ा। भ्रमवश लोगों ने भगवान श्रीकृष्ण के बगल में गाय का चित्र रखकर सामान्य जनता को भ्रमित किया गया कि भगवान श्रीकृष्ण गाय के बड़े प्रेमी थे । वास्तविकता यह है कि भगवान श्रीकृष्ण ब्रह्माण्ड की समस्त रचनाओं को एक समान प्रेम करते हैं और सभी को सुरक्षा व संरक्षण प्रदान करते हैं। भगवान श्रीकृष्ण केवल गाय को ही सबसे अधिक प्रेम करते हैं, यह व्यक्त करके भगवान श्रीकृष्ण का अनजाने में अपमान हुआ है । क्रियायोग ध्यान करके अपने अन्तःकरण में शुद्ध ज्ञान का अवतरण सबसे आवश्यक कर्म है। इस अलौकिक कर्म से शास्त्रों की सही व्याख्या आसानी से सम्भव है ।

गाय, गाय का दूध और गाय के बच्चे पर ध्यान देने से स्पष्ट होता है कि गाय का बच्चा अपनी मॉ का दूध पीकर दिन भर में ही चलने और दौड़ने लगता है । केवल गाय ही नहीं सभी जानवर केवल अपने बच्चे के लिए ही दूध उत्पन्न करते हैं, जो कि उनके अपने बच्चे के जरूरत के अनुरूप होता है । मनुष्य और मनुष्य के बच्चे पर ध्यान दें। मनुष्य का बच्चा एक वर्ष के बाद चलने की क्रिया करता है । इससे स्वतः स्पष्ट है कि गाय का दूध मनुष्य के बच्चे के लिए उपयुक्त नहीं है । गाय के दूध में अनेक तरह की प्रोटीन पायी जाती है । दूध पीने पर अगर कोई प्रोटीन पूरी तरह अमीनो एसिड में नहीं बदल पायी तो उसका कुछ अंश रक्त में चला जाता है जो कैल्शियम, फैट/चर्बी और अल्कोहल से मिलकर थक्के के रूप में एथरोमा या प्लैक बनाता है जो शरीर के धमनियों और शिराओं में एकत्र होकर रक्त प्रवाह को बाधित करता है । हृदय के कोरोनरी धमनी में जब एथरोमा बनता है तो हृदय की मॉसपेशियॉं ठीक से काम नहीं कर पाती हैं । फलस्वरूप एन्जाइना, हार्ट अटैक और अन्य हृदय की बीमारियॉं प्रकट होती हैं । मानव के कल्याण के लिए अमरीका के चिकित्सक वर्ग ने मरीज के हृदय के कोरोनरी धमनी में जमे हुए दूध की प्रोटीन, चर्बी (घी), कैल्शियम के थक्के को सर्जरी के माध्यम से दिखाया है । चित्र में देखने से स्पष्ट है कि दूध की प्रोटीन अनेकानेक खतरनाक बीमारियों को जन्म देती है । जिन देशों में दूध, पनीर आदि का सेवन अधिक होता है वहॉं के लोगों में ब्रेस्ट और प्रोस्ट्रेट कैन्सर सबसे अधिक पाया गया है । ऐसे देश जहॉं पर दूध और पनीर का सेवन नहीं है, वहॉं ब्रेस्ट और प्रोस्ट्रेट कैंसर न के बराबर है । जापान में दूध और पनीर का प्रयोग नहीं होता है। इस देश में ब्रेस्ट और प्रोस्ट्रेट कैंसर के मरीज सबसे कम हैं ।

क्रियायोग आश्रम में गोशाला है लेकिन गायों के दूध प्रयोग नहीं किया जाता है ।गाय का अधिकांश दूध गाय के बच्चे को पिला दिया जाता है । कुछ दूध का मट्ठा बनाकर लोग मट्ठे का सेवन करते हैं और प्राप्त घी दीपक जलाने में प्रयोग होता है। *

गाय के दूध में अनेक तरह की प्रोटीन पायी जाती है । दूध पीने पर अगर कोई प्रोटीन पूरी तरह अमीनो एसिड में नहीं बदल पायी तो उसका कुछ अंश रक्त में चला जाता है जो कैल्शियम, फैट/चर्बी और अल्कोहल से मिलकर थक्के के रूप में एथरोमा या प्लैक बनाता है जो शरीर के धमनियों और शिराओं में एकत्र होकर रक्त प्रवाह को बाधित करता है । हृदय के कोरोनरी धमनी में जब एथरोमा बनता है तो हृदय की मॉसपेशियॉं ठीक से काम नहीं कर पाती हैं । फलस्वरूप एन्जाइना, हार्ट अटैक और अन्य हृदय की बीमारियॉं प्रकट होती हैं ।

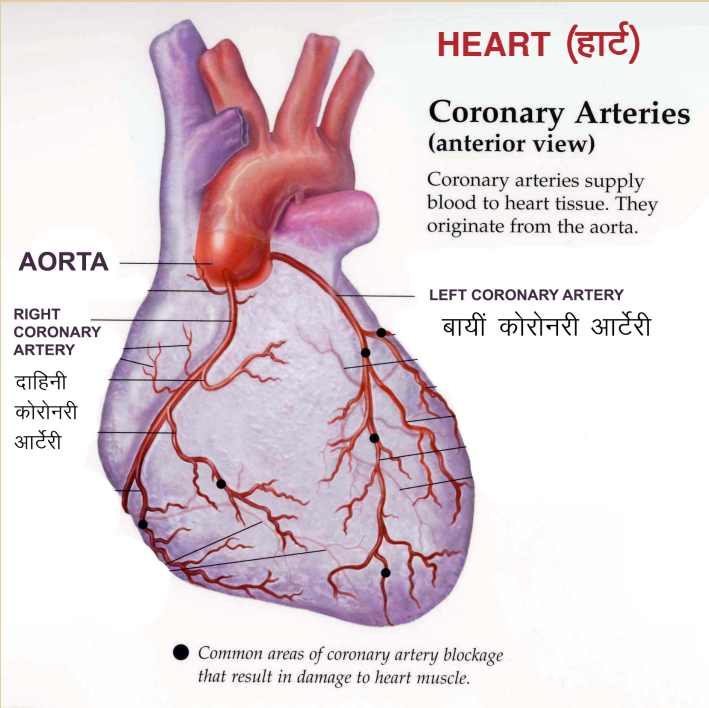

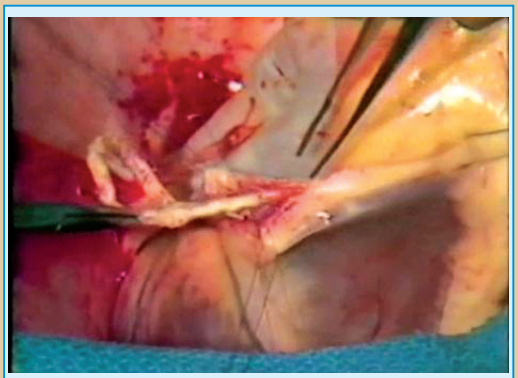

सर्जरी द्वारा कोरोनरी आर्टेरी से निकला हुआ एथरोमा

Mother's Milk Provides Best Nutrition for Child

By adopting the principles and philosophy of Kriyayoga Meditation and diet based on the Science of Kriyayoga, one not only begets the kind of child that one desires, but also the capacity to provide a good quantity of milk for the child for approximately three years. For the human child, mother's milk is best. We should refrain from giving the milk of the cow, buffalo or goat as the milk from these animals is unsuitable for a human child. When animal milk is given to a child whose mother is unable to produce sufficient milk, the child suffers from poor overall development. The milk protein present in animal milk causes cancer, tumour and several physical diseases.

Generally, it is considered that the milk of the cow is pure and sacred. This is the belief amongst many Hindus due to misinterpretation of the Hindi word "*Go*" (गो) given in the scriptures. The use of the word "*Go*" (गो) in the scriptures is interpreted to be cow. This however is incorrect. "*Go*" (गो) actually refers to "the senses". *Gopal* is comprised of "*Go*" (गो) (senses) and "*pal*" (preservation and protection) and means "the preservation of the senses".

In Indian ideology, the work of preservation lays upon Lord Vishnu. Lord Krishna is the reincarnation of Lord Vishnu. Therefore, Lord Krishna is also known as *Gopal.* Due to the misinterpretation of the word "*Go*" (गो) , Lord Krishna is often depicted to be with cows and, therefore, most people have concluded from this that he is a lover of cows. This, however, is not so. Lord Krishna is protector and lover of all creation, not just the cows. This false representation is a great insult to Lord Krishna and should be corrected. **The practice of Kriyayoga Meditation is most necessary to awaken true knowledge within so that we can then easily understand and interpret the Truth given in the scriptures.**

Let us observe the effect of the milk from cows and the milk from a human more closely. When we observe the cows, the calf who feeds solely on the milk of the cow is able to walk within a day. As for human beings, we know that children are able to walk only after approximately a year. This indicates that the nutrition found in the milk of cows is not suitable for the children of humans.

There are many different types of protein found in the milk of cows. If milk protein is left undigested and is not converted into amino acids, then a portion of it enters into the blood. This undigested milk protein mixes with the calcium and alcohol in the blood, and clotting takes place, forming atheroma or plaque that deposit in the arteries and veins in the body. These deposits prevent the normal flow of blood. When atheroma forms in the coronary artery of the heart, due to improper flow of blood, the muscles of the heart do not function properly. This results in conditions of angina, heart attack, and diseases of the heart.

For the benefit of humanity, American researchers have shown a surgery where they remove clotting formed from deposited milk protein, fat, calcium, alcohol and meat, from the coronary artery of a patient. From the video clip, it can be witnessed that serious diseases can occur due to the depositing of milk protein in the body. It has been found that in nations where more milk and milk products, cottage cheese (*paneer*), etc. are consumed, there are more cases of breast and prostate cancer. For example, in Japan, where milk and milk -products are hardly consumed, there are significantly fewer cases of cancer.

At the Kriyayoga Ashram & Research Institute, even though milk is not consumed, cows are still reared. The milk produced is left for the calf to drink. Here, cows are reared with the intention that they be served. Some may feel that since milk is not to be consumed, there is no need to rear cows. Rearing of cows should continue for the purpose of providing service to them. As all forms of creation are manifestations of God, so all should be served. Therefore, all cows , as well as other animals must also be served . *

ON THE MEDIA VAN DURING VILLAGE PROGRAM:
Guruji presenting the surgery video to the villagers showing removal of atheroma from the coronary artery

There are many different types of protein found in the milk of cows. If milk protein is left undigested and is not converted into amino acids, then a portion of it enters into the blood. This undigested milk protein mixes with the calcium and alcohol in the blood and clotting takes place, forming atheroma or plaque that deposit in the arteries and veins in the body. These deposits prevent the normal flow of blood. When atheroma forms in the coronary artery of the heart, due to improper flow of blood, the muscles of the heart do not function properly. This results in conditions of angina, heart attack, and diseases of the heart.

क्रियायोग का विस्तार : भारत वर्ष का निर्माण

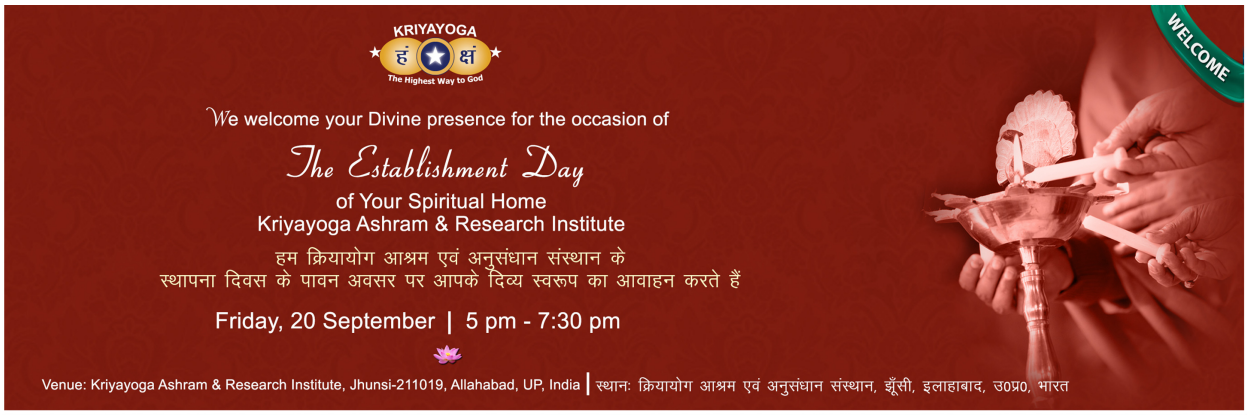

नार्थ अमेरिका कार्यक्रम की एक झलक 2013
Glimpse of North American Summer Healing Program 2013

In the Yog Fellowship Temple Meditation Hall...

Guruji Swami Shree Yogi Satyam ji
is currently conducting Kriyayoga Classes at
the North American Center,
Yog Fellowship Temple, Kitchener,
Ontario, Canada

Practising Kriyayoga in the outdoor tent

गुरुदेव स्वामी श्री योगी सत्यम् जी के द्वारा
वर्तमान में योग फेलोशिप टेम्पल, किचनर, कनॉडा में
क्रियायोग ध्यान का कार्यक्रम वृहद रूप में हो रहा है
जिसमें लोग भारी संख्या में भाग लेकर
शारीरिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

Kriyayoga Practitioners

Your Divine help & prayers are needed
to support this movement...
राष्ट्र निर्माण के इस कार्यक्रम में
आपकी दिव्य प्रार्थनाओं व सहयोग की आवश्यकता है...
हमें लिखे / Write Us: AkhandBharatSandesh@gmail.com

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक: स्वामी श्री योगी सत्यम् द्वारा भार्गव प्रेस 11/4 बाई का बाग इलाहाबाद से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान संस्थान, नई झूँसी, इलाहाबाद 211019 उ०प्र० भारत से प्रकाशित, दूरभाष (0532) 2567329 फैक्स (0532)2567228 मोबाइल नं० 9415217286, 9415123366, 9415279927, 9415217277 से 81 तक तथा 9415235084 **R.N.I. No - UPHIN/29506/24/1/2000-TC**
ई-मेल:AkhandBharatSandesh@gmail.com / KriyayogaAllahabad@hotmail.com **वेबसाइट**:www.Kriyayoga-Yogisatyam.org/AkhandBharatSandesh